AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

रोज़गार और विकास का साधनः छत्तीसगढ़ में कुक्कुट पालन

डॉ. देवाशीष मुखर्जी, प्राचार्य
महंत लक्ष्मीनारायण दास कॉलेज, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

छत्तीसगढ़ ने विगत दो दशकों में अन्य नए राज्यों की तुलना में उल्लेखनीय प्रगति की है। सन् 2000 में छत्तीसगढ़ के साथ ही अस्तित्व में आए झारखंड और उत्तराखंड, अपेक्षित स्तर तक विकास नहीं कर पाए; जबकि छत्तीसगढ़ ने अपने स्वर्णिम काल (2003–2019) में तेजी से विकास किया। इस प्रगति का प्रमुख कारण राज्य में खनिज संपदा की प्रचुरता के साथ–साथ अनुकूल जलवायु भी है, जिसने पशुपालन विशेषकर कुक्कुट पालन को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया है। वर्ष 2003 में जहाँ कुक्कुटों की संख्या 8.18 मिलियन थी, वहीं 2019 तक यह बढ़कर 187.12 मिलियन हो गई। यह लगभग 128 प्रतिशत से भी अधिक की वृद्धि है, जो राज्य में कुक्कुट पालन की अपार संभावनाओं का स्पष्ट प्रमाण है। इस उद्योग के विस्तार का एक कारण यह भी है कि कुक्कुट पालन के लिए किसी विशेष तकनीकी कौशल की आवश्यकता नहीं होती। इसके साथ ही कुक्कुट उत्पादों की सहज उपलब्धता और निरंतर विस्तार पाता बाजार इस उद्योग को मजबूत आधार प्रदान करते हैं। परिणामस्वरूप, छत्तीसगढ़ में न केवल कुक्कुट उद्योग का विकास हुआ है, बल्कि उद्योग–आधारित रोजगार के अवसरों में भी उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है।

मुख्य शब्द

कुक्कुट पालन, कैरी प्रिया, लेइंग हाउस, अर्थव्यवस्था, जैविक प्रौद्योगिकी, कैरी सोनाली..

प्रस्तावना

कृषि एवं पशुपालन भारतीय अर्थव्यवस्था के दो आधारभूत स्तम्भ हैं। स्वाधीनता के पश्चात् भारत सरकार ने कृषि क्षेत्र में आशातीत वृद्धि की है एवं कृषक वर्ग की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, परन्तु पशुपालन क्षेत्र में अनेक कठिनाईयाँ उत्पन्न हुई हैं। 1939 से पहले भारत में कुक्कुट पालन शौकिया तौर पर कुछ गरीब व निचले तथा विशेष प्रकार के जाति के लोग किया करते थे। पंचवर्षीय योजनाओं में भारत सरकार के योजनाओं के माध्यम से यह शौक वर्तमान में आजीविका का महत्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है। भारत सरकार ने 8वीं पंचवर्षीय योजनाओं में इस पर पर्याप्त ध्यान दिया तथा सरकार ने इसे उद्योग का दर्जा दिलाने के संदर्भ में विधेयक पास किया।

यद्यपि पोल्ट्री फार्मिंग शब्द के अंतर्गत मुर्गियाँ, बत्तखें, टर्की, गिनी, काऊल, बटेर तथा मोर आदि सभी पक्षी का पालन सम्भावित है किन्तु सामान्यतः प्रतिशत वर्तमान में इसका प्रयोग मुर्गियों के पालन के लिए किया जाता है। भारत जैसे न्यूनपूंजी वाले देशों में मुर्गीपालन व्यवसाय के रूप में अत्याधिक तेजी से विकसित हो रही है। भारत में इस व्यवसाय के तेजी से विकसित होने के कई कारण हैं जो निम्नलिखित हैः

1. **शिक्षा का प्रचार–प्रसारः** जैसे–जैसे भारत देश में साक्षरता बढ़ती जा रही है वैसे–वैसे लोगों का अंधविश्वास कम होता जा रहा है तथा स्वास्थ्य एवं संतुलित आहार में दृष्टिकोण से कुक्कुट तथा अण्डे का उपयोग बढ़ता जा रहा है।
2. **स्वरोजगार हेतु सुविधाजनक माध्यमः** सामान्यतः मुर्गीपालन के लिए किसी विशेष प्रकार की तकनीकी शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है। फलस्वरूप कोई भी व्यक्ति अपने पाँच–छः माह के अनुभव पर इसे आसानी से सफलतापूर्वक चला सकता है।

3. **सरकार द्वारा प्रोत्साहनः** यदि एक समिति बनाकर इस पोल्ट्री फॉर्म के व्यवसाय को किया जाए तो दो एन. सी.डी.सी. इस पर पर्याप्त वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती है।
4. **चिकित्सा संबंधी प्रयासः** भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान प्रभाग एवं अखिल भारतीय समन्वित कुक्कुट अनुसंधान परियोजना को मिलाकर 2 नवम्बर 1979 को केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान की स्थापना की गई। संस्थान ने बहुत ही कम समय में कुक्कुट अनुसंधान तथा विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान अर्जित कर लिया है।

छत्तीसगढ़ में कुक्कुट पालन की सम्भावनाएँ

छत्तीसगढ़ में वर्तमान समय में कुल छोटे बड़े पोल्ट्री फार्मिंग की संख्या लगभग 4000 हैं। छत्तीसगढ़ की प्रमुख विशेषता यहाँ की बेरोजगारी, शिक्षित न होना तथा न्यूनपूंजी का होना। वर्तमान में छत्तीसगढ़ में प्रमुख रूप से तीन प्रकार के मुर्गियों की फार्मिंग की जाती है, जो निम्नलिखित हैं:

1. **ब्रायलरः** इसका उपभोग पूरे भारत वर्ष में सर्वाधिक है। इस प्रकार के मुर्गियों का पालन केवल उनके मांस के लिए किया जाता है। इन मुर्गियों की विशेषता यह है कि इनका वजन 25–30 दिन में 1 कि.ग्रा. तथा 2 माह में 3 कि.ग्रा. के लगभग हो जाता है। इस प्रकार के पालन में दाने पर अधिक खर्च होता है तथा इसके चूजों की कीमत अपेक्षाकृत अधिक होती है।
2. **लेयरः** यह अण्डे देनेवाली मुर्गियाँ होती हैं। इसका पालन मुख्यतः अण्डे देने के लिए किया जाता है। इस प्रकार की मुर्गियों को फार्मिंग करने वाला प्रथम छः माह तक केवल उस पर व्यय करता है तथा वह अपने छः माह की आयु से अगले एक वर्ष अर्थात् डेढ़ वर्ष तक लगभग रोज अण्डे देती है, तत्पश्चात् इसे मांस के लिए उपभोग में लाया जाता है, क्योंकि यह डेढ़ वर्ष पश्चात् अण्डे देना कम कर देती है तथा अपेक्षाकृत दाने पर अधिक व्यय होने लगता है।
3. **कॉकरेलः** इसे सामान्य शब्दों में मर्द मुर्गियाँ कहा जाता है, क्योंकि यह एक ऐसी प्रजाति होती है जो न तो अण्डे दे सकती है और न ही मांस के लिए उतनी तेजी से अपना विकास कर सकती है। ये प्रजाति वास्तव में न चाही गई प्रजाति होती है। कोई भी हेचरिज (जो अण्डा सेने का कार्य करता हो) लेयर प्राप्त करने के लिए अण्डे को सेता है, तो उससे लगभग 45 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक कॉकरेल की उत्पत्ति होती है। ऐसा कॉकरेल चूजा बाजार में सबसे सस्ते दर पर उपलब्ध होता है। कोई भी व्यक्ति जिसके पास अधिक मात्रा में पूंजी उपलब्ध नहीं हो, वे अपने फार्मिंग व्यवसाय को सामान्यतः कॉकरेल के उत्पादन से प्रारंभ कर सकता है।

उक्त प्रजाति के अलावा भारत में अनेक ऐसे लाभदायक प्रजातियाँ पाई जाती है जिसका पालन छ.ग. में किया जा सकता है:

लेयर मुर्गी में

1. **कैरी प्रियाः** अण्डे देने वाली मुर्गियों के प्रजनकों का मुख्य संबंध अच्छी गुणवत्ता के लेयर से है अर्थात् ऐसे लेयर मुर्गी जिसकी आहार दक्षता अच्छी एवं चूजे ही लागत कम हो तथा अधिक अण्डा उत्पादन वाली हों। कैरी प्रिया, जिसे पहले आई एल आई–80 के नाम से जाना जाता था, इसी प्रकार की सफेद अण्डे देने वाली एक लेयर मुर्गी है। कैरी प्रिया हचइल लेगहार्ज की वंशावली के सर्वोत्तम नर तथा मादा संस्करण से विकसित की गई है।

उत्पादन विशेषताएँ

1. दक्ष आहार अंतरण।
2. आहार लागत पर अत्याधिक संभावित लाभ।
3. अन्य स्टाकों से सर्वोत्कृष्ट।
4. लेइंग हाऊस मृत्यु दर कम।

एक विश्लेषण

परिपक्वता	प्रथम अंडा 50 प्रतिशत उत्पादन सर्वाधिक उत्पादन	17 से 18 सप्ताह 150 दिन 26 से 28 सप्ताह
जीवन क्षमता	ग्रोविंग (वर्धनशील) लेडिंग (अंडे देने के दौरान)	96 प्रतिशत 94 प्रतिशत
अंडा उत्पादन	सर्वाधिक हेन हाउस्ड से 72 सप्ताह हेन डे से 72 सप्ताह	92 प्रतिशत 298 अंडे से अधिक 31 अंडे से अधिक
आहार दक्षता	20 से 72 सप्ताह	2.1 कि. ग्रा.
अंडे का आकार	औसत अंडा भार	54 ग्राम
अंडे का आकार	आंतरिक	आंतरिक गुणवत्ता

2. **कैरी सोनालीः** भारतीय बाजार में सुनहरे भूरे रंगों के अण्डों की माँग बहुत अधिक है। उपभोक्ताओं के खान–पान की आवश्यकता को पूरा करने के लिए इस सुनहले भूरे रंग के अण्डे देने वाली मुर्गी कैरी सोनाली को वर्ष 1992 में विकसित कर व्यवसायिक दोहन के लिए जारी किया गया है। इसे व्हाइट लेगहार्न की नर वंशावली तथा रोड आइलैण्ड की रेल मादा वंशावली के संस्करण से विकसित किया गया है।

उत्पादन विशेषताएँ

परिपक्वता	प्रथम अंडा 50 प्रतिशत उत्पादन सर्वाधिक उत्पादन	18 से 19 सप्ताह 155 दिन 27 से 29 सप्ताह
जीवन क्षमता	ग्रोविंग (वर्धनशील) लेडिंग (अंडे देने के दौरान)	96 प्रतिशत 94 प्रतिशत
अंडा उत्पादन	सर्वाधिक हेन हाउस्ड से 72 सप्ताह हेन डे से 72 सप्ताह	90 प्रतिशत 280 अंडे से अधिक 283 अंडे से अधिक
आहार दक्षता	320 से 72 सप्ताह	2.2 कि. ग्रा.
अंडे का आकार	औसत अंडा भार	54 ग्राम
गुणवत्ता	उत्कृष्ट	

दोहरे उद्देश्य के लिए पाई जाने वाली मुर्गियाँ

1. **कैरी देवेन्द्रः** कैरी देवेन्द्र एक माध्यम आकार तथा दोहरे उद्देश्यों को पूरा करने वाली पक्षी है। इसको रंगीन ब्रायलर वंशावली की नर वंशावली तथा रोड आइलैण्ड रेड की मादा वंशावली के संस्करण से उत्पन्न किया जाता है। इसके आकर्षण, चमकदार तथा रंगीन पक्षति के कारण यह भारतीय बाजार में उपभोक्ताओं को काफी प्रभावित करती है। यह आठ सप्ताह के अपने मितव्ययी आहार दक्षता के कारण व्यवसाय के दृष्टि से अधिक लाभकारी होती है। कैरी देवेन्द्र ग्रामीण कुक्कुट उत्पादन के लिए और अधिक लाभदायक होती है, क्योंकि इसका वजन 12 सप्ताह की आयु में लगभग 1800 ग्राम से 2000 ग्राम तक होता है तथा इसका जीवनकाल भी अधिक होता है एवं एक वर्ष में यह 190 से 200 अण्डे तक उत्पादन करती है।
2. **कैरी श्यामाः** यह भारतीय देशी मुर्गी की कडकनाथ नस्ल तथा कैरी रेड संस्करण से विकसित की गई है। इस मुर्गी का पक्षी बहुरंगी होता है तथा उसमें काले रंग की अधिकता होती है। इस मुर्गी की त्वचा, चोंच, टांग, पंजे तथा पंजे केतले गहरे भूरे रंग के होते हैं। इस पक्षी की सबसे अधिक विशेषता यह है कि इसके शरीर के अधिकांश आंतरिक अंग अवयव काले रंग के होते हैं। काले रंग विभिन्नता उनकी कंकालीय

मांसपेशियों, नसों, स्नायुओं, नलिकाओं, मस्तिष्क तथा अस्थि मज्जा पर भी दिखाई पड़ती है। इन मुर्गियों की मांस पेशियों तथा उतकों का काला रंग इसलिए होता है, क्योंकि उन पर मेलानिन रंग दृव्य जमा होता है, जिसके कारण इनके मांस में प्रोटीन की मात्रा अधिक होती है तथा वसा एवं मांसल रेशा कम होता है। काली पक्षित तथा मांस रंगी पक्षी, वार्षिक अण्डा उत्पादन 210 अण्डे तथा सभी प्रकार के वातावरण के लिए अनुकूल होती है।

छत्तीसगढ़ में न्यून–पूंजी एवं ज्ञान की कमी के कारण अधिकतर व्यवसायी इसके उत्पादन (फार्मिंग) पर अधिक ध्यान न देकर इससे संबंधित व्यवसाय पर अधिक ध्यान केन्द्रीत करना चाहते हैं। पूरे छत्तीसगढ़ में लगभग छोटे–बड़े सभी व्यवसायी मिलाकर 75 हजार व्यक्ति इससे अपनी आजीविका चला रहे हैं। पोल्ट्री फार्मिंग से अनेक संबंधित व्यवसाय का भी जन्म होता है, जैसे – दाना की ब्रिकी तथा विष्ट से अनेक खाद का निर्माण आदि।

सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में वर्तमान में 17 लाख मुर्गियों की संख्या है जो प्रतिदिन लगभग 68000 कि.ग्रा. मक्का का उपयोग करते हैं। यदि सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में पोल्ट्री एवं संबंधित व्यवसाय का आंकलन किया जाए तो लगभग 200 करोड़ रुपए का व्यवसाय पूरे प्रदेश में किया जाता है, जिससे सरकार लगभग 10 से 15 करोड़ रुपए की राजस्व प्राप्त करती है। इस उत्पाद की माँग लगातार बढ़ती जा रही है तथा छत्तीसगढ़ में इसके सुनहरे अवसर उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ में न्यून पूंजी, ज्ञान की कमी एवं जोखिम लेने की न्यूनतम क्षमता के कारण अधिकतर कुक्कुट व्यवसायी इसके उत्पादों पर ध्यान ना केंद्रित कर इससे संबंधित व्यापार पर अपना ध्यान अधिक केंद्रित करना चाह रही है। संपूर्ण छत्तीसगढ़ में पोल्ट्री फार्मिंग व्यवसाय से जुड़े प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष छोटे–बड़े सभी व्यवसायियों को मिलाकर 1.5 लाख से भी अधिक व्यक्ति अपनी आजीविका चला रहे हैं। पोल्ट्री फार्मिंग व्यवसाय अपने साथ–साथ अनेक सहायक उद्योगों व अन्य व्यवसायों को भी जन्म देता है, जैसे दाना की बिक्री, पशु चिकित्सा संबंधी व्यवसाय तथा विष्ट से निर्मित खाद का निर्माण आदि। संपूर्ण छत्तीसगढ़ में वर्तमान में लगभग 187.12 मिलियन मुर्गियों की संख्या है, जो प्रतिदिन 74.80 लाख किलोग्राम मक्के का कुक्कुट आहार के रूप में उपयोग करते हैं। एक अनुमान के अनुसार यदि संपूर्ण छत्तीसगढ़ में पोल्ट्री एवं संबंधित व्यवसाय का आंकलन किया जाए तो लगभग 1500 करोड़ का व्यवसाय पूरे प्रदेश में किया जाता है, जिससे सरकार को लगभग 150 से 200 करोड़ की राजस्व प्राप्त होती है। छत्तीसगढ़ में पोल्ट्री फार्मिंग के विकास में प्रौद्योगिकी प्रगति, बढ़ती मांग, सरकारी पहल एवं वाणिज्यिक और जैविक खेती में उच्च बजट वाले व्यावसायिक घरानों को आकर्षित किया है। फलस्वरुप कुक्कुट उत्पाद सम्बन्धी उत्पादन लगातार बढ़ती जा रही है एवं रोजगार की अपार संभावनाएं पैदा हो रही है, जिससे छत्तीसगढ़ में कुकुट उद्योगों का सुनहरा भविष्य निश्चित हो रहा है।

संदर्भ सूची

1. छत्तीसगढ़ की कृषि समृद्धि।
2. प्रशासनिक प्रतिवेदन, मार्च 2014 तक।
3. https://mospi.gov.in › publication › statistical-abstract-i..., Accessed on 02/05/2020.
4. https://pixie.co.in › author › poultry.pcslgmail.com, Accessed on 08/05/2020.
5. https://hindpoultry.com, Accessed on 06/05/2020.
6. https://www.indiabudget.gov.in › economicsurvey, Accessed on 04/05/2020.
7. https://www.poultryworld.net, Accessed on 09/05/2020.
8. https://www.indiastat.com, Accessed on 12/05/2020.

––==00==––